काव्य संग्रह

# "शेष होते हुए"

गोविन्द माथुर




राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

**जनजीवन प्रकाशन**

नवाब हवेली, लिपोलिया, जयपुर

शेष होते हुए (कविता)



प्रथम संस्करण 1985

आवरण :
गोविन्द जोशी

प्रकाशक :
जनजीवन प्रकाशन
नवाब हवेली, त्रिपोलिया बाजार,
जयपुर

मुद्रक :
पॉपुलर प्रिन्टर्स
जयपुर

मूल्य : 25.00 रुपये

# क्रम



## आत्महत्या से पहले

इससे पहले
कि
आत्महत्या करलूं
पराजय
स्वीकार करलूं
अपनी

अपने में
समाए कड़ुएपन
को
थूक जाना
चाहता हूँ
चन्द चेहरों पर

ताकि
मेरी मौत
एक
सामान्य स्थिति में हो

अपनी
पीठ पर
उगे कैक्टस को
गाड़
देना चाहता हूँ
उन
पीठों पर

जिन्होंने
इसे सींच कर
मुझे
जवान किया है

जला
डालना चाहता हूँ
अपने
गले में
लटकी डिग्रियों को
जिन्होंने
काट दिए
मेरे हाथ

और मैं
सड़कों पर
फैंक दिया गया

इससे पहले
कि
आत्महत्या करलूं
पराजय
स्वीकार करलूं
अपनी

कुछ
और लोगों को भी
नींद की गोलियां
बांट जाना

चाहता हूँ
जो
जिन्दगी भर
मुझे
एक योग्य आदमी
समझते रहे

लिख
जाना चाहता हूँ
मेरी
लाश को
उन
लोगों के नाम

जो मेरे
जिस्म को
नोंच नोंच कर
अपनी
भूख मिटा सकें

इससे पहले
कि
आत्महत्या करलूं
पराजय
स्वीकार करलूं
अपनी

## अस्तित्व

जब
पूरी जिन्दगी ही
एक
समझौता बन जाती है

तो
मुझे अपने
किसी भी स्वप्न के
आत्महत्या
कर लेने पर
दु:ख नहीं होता

चेहरे पर
बनावटी
मुस्कान लिए ही
जब जीना है
तो
जिन्दगी
सिर्फ
मौत का
इन्तजार लगती है

ऐसे में
किसी भी
रेशमी सम्बन्ध पर

तेजाब
डाल देने पर
मुझे
कोई
शिकायत नहीं होती

अपने
टूटे हुये
अस्तित्व को
सहेज लेने का
मोह
क्या अर्थ रखता है

जब
टूटन ही
जिन्दगी है
तो
किसी से जुड़ना
अलग होना
पर्यायवाची
हो जाता है

मुझसे
तमाम
जुड़े हुए
अलग हुए
लोगों को

मुझसे
सम्बन्धों के

सम्भावना के
अर्थ
जला
देने चाहिए

एक
मृत अस्तित्व
की
खोज
अब
बन्द
कर
देनी चाहिए

## एक अनाम दर्द

कई
वर्षों की तहें
पर्त
दर
पर्त
बालू
रेत के
टीलों मे

धंसाता
रहता हूँ
मैं

प्रति
दिन
एक
और
दिन

स्याह कालापन
उदास रात
डरा देने वाली
आकृतियों के बीच
बिताता रहता हूँ

प्रति
रात
एक
और
रात

एक नाम
जिसे मैं
काट देना
चाहता हूँ

एक सूरत
जिसे मैं
खो देना
चाहता हूँ

गहन
कोहरे में
शून्य में

प्रति क्षण
कोई
कुरेदता
रहता है
मेरा मन

हटाता
रहता है
जमीं पर्तं

खाली हो
जाता हूँ
मैं

उभर आता है
फिर
दर्द
एक
अनाम
दर्द

## डूबना और डूबना

दूर
बहुत
दूर
तक
फैला हुआ रेगिस्तान

चारों
ओर
से
चलती
अन्धी हवाएं

तपती
धूप
में
जल गया पूरा बदन

मुझ
नहीं
रहा है
साहस
मृगतृष्णाओं तक दौड़ने का

कहां
से

लाऊं
ऊंट के पांव

रेत
के
नीचे
बहुत
नीचे
दब गए
मेरी
खुली आंखों के स्वप्न

अब
तो
बस
आंखें
बन्द
कर
डूब जाना चाहता हूँ

एक
निराकार
अन्धकार
में

अंधेरे में
ढूंढता हूँ
उस
हरे भरे
वसन्त को

जिसने
मुझे
बहला
फुसला
कर
    उस नीले पहाड़ से
यहाँ
तक
पहुंचाया
है

मैं
खोगया
हूं
अकेला
हो गया
हूं
    नीला पहाड़ कहाँ है

मैं
लगातार
डूबता
जा रहा
हूं
    रेत में और रेत में

## प्रसंगहीन

अपने ही
प्रसंगों से
कटा हुआ
मैं

प्रश्नों की
भीड़ में
स्वयं
एक प्रश्न
बन गया हूँ

भूत की
कब्र पर
खड़ा
मेरा वर्तमान
अपने
भविष्य की
प्रतीक्षा में
स्वयं
एक कब्र हो गया है

ठंडे
अंगारों से
बरसती गर्म हवाएं

दिशाओं मे
बर्फ फेंकती
स्वयं
बर्फ हो जाती है

सुनियोजित
षड्यंत्र सा
मेरा
भविष्य
बन्द है
एक
खुली
किताब में

फिर
क्यों न ?
एक कब्र
उसकी भी
खोद लूं

## जंगल की आग

मैंने
हर मौसम में
अपने
वस्त्रों का
रंग बदल कर

परिवेश में
व्याप्त
अंधेरे को
अपनी
मुट्ठी में बन्द
सूरज
फेंका है

पर
तटस्थता
और
स्थितप्रज्ञता ने
हर मौसम को
बर्फ कर दिया

मेरे
हर प्रयत्न को
तुम्हारी
सुनहली देह
ने

डस लिया
और
मेरी हथेलियों पर
हर बार
उग आए
कुछ जंगली पौधे
जबकि
हर मंच से
तुमने
बहार
आने का
ऐलान किया

मैंने
अपने
ऊपर
झुक आए
आसमान की
परवाह किए बिना
तुम्हारी
मुस्कान पर
भरोसा
कर लिया

और
एक स्वतन्त्र देश
के
सीलन भरे
कटघरे में
उखड़ी उखड़ी

सांसे लेता रहा
कि
तुम
मुझे
लोकतन्त्र का
अर्थ
समझाओगे

पर
हर वार
कुछ
नारों के
माध्यम से
तुम
मुझे
बच्चों की तरह
बहलाते रहे

अब
जबकि
मैं
अपनी
हथेलियों पर
उग आए
जंगल में
आग
लगाना
चाहता हूं
तुम्हें
अपने

अस्तित्व की
चिन्ता
क्यों है

तुमने
पहले ही
एक
पूरी
पीढ़ी को
नपुंसक
कर देने की
साजिश की है

अच्छा हो
कि
तुम
तालियां
सुनने के आदी
तालियां
बजाते हुए
अपनी
जमात में
शामिल
हो जावो
तुम्हारा
शासन
एक पूरी
हिजड़ी व्यवस्था
के
साथ

जल
जाने
वाला है

मेरे
जंगल में
उठती हुयी
ग्राग से

## उजाले की पहचान

शहर
की धमनियों मे
घुला हुआ विष
धीरे धीरे
छीलता
जा रहा है
हमारा
जिस्म

शरीर से
रिसते घाव
बहने लगे हैं
आंच
पाकर

रोशनी का
रंग
गहरा नीला
होता
जा रहा है

सारे
चेहरे
छिल कर
हो गए हैं
एक से

किसी की भी
अलग से
पहचान
नहीं रही

ऐसे में
क्या
अर्थ रखता है
कोई
एक नाम
जिसे हम
लगातार
गालियां
दिए जा रहे हैं
जबकि
हमारा
खुद का
चेहरा
पहचानना
मुश्किल है

कॉफी के
प्यालों के साथ
व्यवस्था पर
थूका गया
जहर
हमारे ही
जिस्म में
तैरता
रहता है

हर समय
यानी कि
हम
थूक
फेंकते नहीं
निगलते रहते हैं
और
अपनी जगह
बैठे-बैठे
अन्दाज
लगाया करते हैं
अन्धेरा
बढ़ते जाने का

पैंतीस
अन्धेरी
सुरंगों को
पार करते हुए
हम
अभ्यस्त हो गए हैं
अंधकार के

लगातार
फैलते विष ने
हमें
इतना
बना
दिया है
नपुंसक
कि
छत्तीसवीं

सुरंग से
गुजरते हुए

हमें
उजाले की
पहचान ही
नहीं रही

अगर तुम
तहखाने से
अपना
पुराना चेहरा
ढूंढ लाते ।

दोस्ती
बुरी तो नही

सन्नाटे के
कोलाहल में
पद्चाप
ध्वनित
प्रतिध्वनित
मेरी सांसों की
आवाज

साथ
चलता हुआ
मेरा साया
दूर
अदृश्य
एक आग की
अनुभूति
मेरे
प्रश्न
फिर भी
जल नहीं पाते

रात के
बीत जाने का
अफसोस
शाम तक
रहता है
उजाले में
लोग
न जाने

## वे लोग

वे लोग
अपने
बिलों में
अपनी
बदरंग
केंचुली लिए
अब भी
बैठे हैं

अपनी
कमजोर
बूढी
आंखों से
तलाश
रहे है
एक
ऐतिहासिक
मणि

मेरे
होने का
एहसास
उन्हें
नहीं होता

उन
अंधे

## फर्क इतना ही है

फर्क
इतना ही
है
कि
कुछ
फर्क
नहीं
पड़ता

चाहे तुम
राष्ट्रीय धुनों के
बीच
अपने
मातम को
हल्का कर लो
या
सलामी तोपों के नीचे
मेरे मातम को
दबाए रखो

किसी गली के
नुक्कड़ पर
एक आजाद कुत्ता
भौंकता रहे
या
तुम

नंगापन
छुपाने के लिए
कमर से
बांध लो

एक ही बात है
कुर्सी के हत्थे पर
उल्लू का पट्ठा हो
या
उल्लू के पट्ठे पर
कुर्सी का हत्था हो

फर्क
इतना ही
है
कि
कुछ
फर्क
नहीं
पड़ता

नंगापन
छुपाने के लिए
कमर से
बांध लो

एक ही बात है
कुर्सी के हत्थे पर
उल्लू का पट्ठा हो
या
उल्लू के पट्ठे पर
कुर्सी का हत्था हो

फर्क
इतना ही
है
कि
कुछ
फर्क
नहीं
पड़ता

करना
सब कुछ
पड़ता है

एक अभ्यस्त सी
जिन्दगी
जीते रहना
और
रोटी के साथ
कविता को
पचाते रहना

तुम ही
बताओ
क्या ये सब
पूर्व नियोजित
षड्यन्त्र नहीं है

तुम्हारा और
मेरा होना
चाहे
अनायास
रहा होगा
पर–दोस्त
तुम्हारा और
मेरा जीना
अनायास
नहीं है
तुम क्यों
किसी

## भटकाव

मैं
न भी जानता तो
क्या होता
जानता भी हूँ
तो क्या हुआ
मुझे
इस यात्रा मे
सम्मिलित होना था
और मैं हो गया

ये
सब
ऐसे ही हुआ
जैसे मेरा
जन्म हो गया

ये बात और है
कि
मैं किसी के साथ
नही चल सका
इसलिए
नहीं कि
सभी लोग
बेईमान या भ्रष्ट है
या कि
लोगों ने ही

## भटकाव

मैं
न भी जानता तो
क्या होता
जानता भी हूँ
तो क्या हुआ
मुझे
इस यात्रा में
सम्मिलित होना था
और मैं हो गया

ये
सब
ऐसे ही हुआ
जैसे मेरा
जन्म हो गया

ये बात और है
कि
मैं किसी के साथ
नहीं चल सका
इसलिए
नहीं कि
सभी लोग
बेईमान या भ्रष्ट है
या कि
लोगों ने ही

मुझे
छोड़ दिया
कारण चाहे
कुछ भी रहा हो
पर
इस लम्बी यात्रा में
मैं
अकेला ही रह गया

बस
अब तक की यात्रा में
कुछ खरोंचें
जो मेरे जिस्म पर
रह गई हैं
उनका दर्द ही
मुझे रोके रहता है
नही तो
क्या मैं
यहीं पर खड़ा रहता

अब
किसी को
दोष देने से भी
क्या फायदा
मैं ही
उन लोगों के साथ
हो गया था
जिनकी यात्रा
एक बिन्दु पर
आकर रुक गयी

और मैं
अपना
पथ भूल गया

मैं अब भी
चल रहा हूँ
इस
आशा में
कि
मुझे अपनी
राह
कहीं तो
मिलेगी ही

नहीं भी
मिले तो
क्या
मैं
चल तो
रहा ही हूँ

# हरे स्वप्न के अतिरिक्त

तुमने कभी
सोचा भी नहीं होगा
तुम्हारे आंगन में
कभी सोना भी उगने लगेगा
और तुम
हथियारों से लैस होते हुए भी
बड़ी चालाकी से लूट लिये जावोगे
तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बचेगा
एक हरे स्वप्न के अतिरिक्त

तुम आसमान की ओर मुंह किए
पेट भरने के लिये
ताक रहे होंगे
तेज धूल उड़ाती गाड़ियां
कुछ सफेद पर्चे बांट जायेंगी
जिनका सीधा सम्बन्ध
तुम्हारी भूख से होगा

वर्ष में एक दिन
ऐसा भी आता है
तुम्हारे सूखे चेहरों पर
खुशी पोत दी जाती है
तुम गरीबी के प्रतीक
परेड में सम्मिलित कर
राष्ट्र की प्रगति के
प्रतीक बना दिये जाते हो

तुमने कभी सोचा भी नहीं होगा
देश के कर्णधार ही
तुम्हें लूटने लगेंगे
ग्रौर तुम
ग्रपनी झोंपडियों के पीछे
तेज कच्ची शराब में धुत्त
समाजवाद ग्राने की प्रतीक्षा में
'गरीबी हटाग्रो' के नारे पर विश्वास कर
देशी गालियों का शुद्ध प्रयोग कर रहे होगें

न तुम लोग इतने कमजोर ही थे
न ही वे इतने ताकतवर
पर तुमने
गरीबी हटाने के लिए
ग्रपने हाथ कटा कर
उनके पंजे मजबूत कर दिये
ग्रौर उनके जबड़ों में
समा गया तुम्हारा भविष्य
फिर धूल भरी सड़कों पर
तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया
एक हरे स्वप्न के ग्रतिरिक्त

## रौंदते हुए

आश्चर्य कि मुझे
महसूस ही नहीं हुआ
और न जाने किस क्षण वह
तेजी से दौड़ता हुआ आया
और
मुझे रौंदता हुआ निकल गया

मेरे सामने
जो छोटा सा पहाड़ है
वह मुझे बहुत अच्छा लगता है
मैं कभी कभी
शाम को उस पर चढ़ कर
पहाड़ के पीछे की ओर देखता हूँ
जहां कुछ भी नहीं है–है
एक गहराई–सिर्फ गहराई

यद्यपि उस पहाड़ या गहराई से
आने वाले का कुछ भी सम्बन्ध न था
फिर भी मुझे सन्देह है–कि
वह उस गहराई से ही आया होगा

उसने किसी रात
पहाड़ की ऊंचाई से
मेरे कमरे की खिड़की में झांका होगा
मुझे रात देर तक जागते हुए देख

यही सोचा होगा कि—मैं
उससे मिलने को आतुर हूँ
पर सचमुच
मुझे उसकी कोई प्रतीक्षा नहीं थी
मै बहुत निराश हो चुका था
मुझे एक झूंठे विश्वास में जीते हुये
इतने वर्ष हो गये थे—कि
अब झूंठ भी सच होने लगा था

मुझे विश्वास हो चला था
वह अब नहीं आएगा
मैं ही नहीं
मेरा हर हम उम्र
उसकी सूरत की
कल्पना किया करता था
और सभी आश्वस्त थे
वह बहुत ही सुन्दर होगा

मुझे उससे
कोई खास उम्मीदें नहीं थीं
प्रारम्भ से ही मैं उसके प्रति सशंकित था

कुछ लोग
जो कि उससे मिल चुके थे—ने
मुझे बताया
उसकी सूरत डरावनी है
और वह बिल्कुल भूखा और नंगा है
मेरे शुभचिन्तकों ने
इसे अतिशयोक्ति भी कहा—

पर ग्राज
जब ग्राइने में ग्रपना चेहरा देखा
मेरे चेहरे पर कुछ निशान पड़ गये थे
कुछ खरोंचें ग्रौर हल्के जख्म थे
जो मुझे पीड़ा तो नहीं दे रहे थे
पर किसी के
मेरे ऊपर से गुजर जाने का
ग्रहसास ग्रवश्य करा रहे थे

मैं समझ गया।
यह वही था
जो मुझे रौंदता हुग्रा निकल गया
ग्रौर मेरे चेहरे पर रख गया कुछ
स्थायी जख्मी–निशान

वह मेरा कोई नही है
वह ग्रब नहीं ग्राएगा
मुझे उसकी प्रतीक्षा नहीं है।

## क्योंकि मैं तुम्हें जानता हूँ

हर बार तुम लौट आते हो
यही इसी जगह पर
एक अलगाव महसूस करते हुए भी
तुम्हारी पीली हथेलियों पर
और भी दाग उभर आए हैं
निरीह होती तुम्हारी आखे
जिनकी खुशबू शेष होती जा रही है
गंधहीन होती तुम्हारी देह
कभी विसर्जित कर दी जाएगी
हवाओं के नाम
कितना सहज हो गया है
तुम्हारा असहज हो जाना
मैं कहता हूँ
तुम चीखते क्यों नही हो
चीर क्यों नहीं देते
उस उजाले को
जो सही दिशा पर भी
तुम्हें भटका रहा है
और जो तुम
बिना होठों को हिलाए
एक खामोश अभिव्यक्ति देते हो
कौन महसूसता है
तुम्हारा टूट जाना
मैं भी नहीं
क्योंकि मैं तुम्हे जानता हूँ

## शेष होते हुए

इस तरीके से नहीं
पहले हमें
सहज होना होगा
किसी तनाव में
टूटने से बेहतर है
धीरे-धीरे
अज्ञात दिशाओं में
गुम हो जाएं

हमारे सम्बन्ध
कच्ची बर्फ से नहीं
कि हथेलियों में
उठाते ही
पिघल जाएं
आखिर
हमने
एक-दूसरे की
गर्माहट
महसूस की है

इतने दिनों तक
तुमने और मैंने
चौराहे पर
खड़े होकर
अपने अस्तित्व को
बनाए रखा है

ये ठीक है—कि
हमें गुम भी
इस ही
चौराहे से होना है

पर
इस तरीके से नहीं
पहले हमें
मासूम होना होगा
उतना ही मासूम
जितना हम
एक-दूसरे से
मिलने के पूर्व थे

पहले
मैं या तुम
(कोई भी)
एक आरोप
लगाएंगे
न समझ पाने का
(तुम्हे या मुझे)
और फिर
महसूस करेंगे
उपेक्षा
अपनी-अपनी

कितना
आसान होगा
हमारा
अलग हो जाना

जब हम
किसी उदास शाम को
चौराहे पर
मौन खड़े होंगे

और फिर
जब
तुम्हारे और मेरे बीच
संवाद टूट जाएगा
कभी तुम
चौराहे पर
अकेले होगे
और
कभी मैं
फिर
धीरे-धीरे
हमें
एक-दूसरे की
प्रतीक्षा नहीं होगी

कितना
सहज होगा
हमारा
अजनबी हो जाना
जब हम
सड़कों और गलियों में
एक-दूसरे को देख कर
मुस्करा भर देंगे
या—हमारा हाथ
एक औपचारिकता में
उठ जाया करेगा

हाँ
हमें
इतनी जल्दी भी क्या है
ये सब
सहज ही हो जाएगा
फिर हमें
बीती बातों के
नाम पर
यदि
याद रहेगा—तो
सिर्फ
एक-दूसरे का
नाम

## मेरे समय का इतिहास

मैंने एक काल-पात्र
गाड़ दिया है
अपने जर्जर मकान के
आंगन में
बहुत गहरे में
दबा दिए हैं
कुछ
महत्वपूर्ण दस्तावेज

समाजवाद और भ्रष्टाचार का सम्बन्ध
एक टिप्पणी
स्वतन्त्रता उपरान्त
बेईमानी और झूठ का महत्व
एक समीक्षा
सरकारी नौकरी और
भाई भतीजावाद में समन्वय
एक परिचर्चा
चमचावाद देश की प्रगति में
कितना सहायक
एक शब्द-कोष
बदलते मूल्यों और
शब्दों के नए अर्थों सहित

दूसरी फाइल में है
समकालीन साहित्य के कुछ उदाहरण
भूख और आदमी पर कविता
साहित्यिक घोषणा-पत्र
रोटी और राजनीति पर
एक लम्बी कहानी
प्रगतिशीलता बनाम
जनवाद पर एक बहस
साहित्यकार और सरकार
पर एक आलोचनात्मक निबन्ध
अकादमी और पुरस्कारों पर
एक विहंगम दृष्टि

और अन्त में
मनोरंजन की विविध सामग्री
नेता, अभिनेता, उद्योगपति और अफसरों के
ब्लू प्रिन्ट

आदमी और औरत के
नेगेटिव
सम्बन्धों के अवशेष
(एक डिबिया में बन्द)
टूटन, बिखराव, कुंठा और भय के
कार्टून
और एक सिगरेट पीते हुए
मुर्गे का पोर्ट्रेट

## क्योंकि मैं अभिमन्यु नहीं हूँ

मैं अभिमन्यु नहीं हूँ
फिर भी इस व्यूह में फंस गया हूँ
जब मैं गर्भ में था
इस व्यूह की रचना हो रही थी

मैं महाभारत का पात्र नहीं हूँ
स्वतन्त्र भारत का नागरिक हूँ
मेरा बाप अर्जुन नहीं था
एक परतन्त्र नागरिक था

मैंने अपनी आंखें
एक सुखद स्वप्न में खोली थीं
अब तक चौंतीस स्वप्न
मेरी आंखों में दफना दिए गए

मेरे चेहरे पर घाव
हथियारों के नहीं हैं
उन नारों के है
जो हर मौसम में फेंके गए हैं

यह शरीर, ढांचा
रोटी खाने से नहीं हुआ है
यह सब तो
स्वादिष्ट आश्वासनों के कारण है

मैं विद्रोह नहीं करूंगा
मैं एक शिक्षित नागरिक हूँ
मैंने अंग्रेजी में हिन्दी पढ़ी है
मेरा देश 'भारत दैट इज इंडिया' है

मैं भूख से नहीं मर सकता
भारत एक कृषि-प्रधान देश है
मैं बेरोजगार भी नहीं हूँ
भारत एक क्लर्क प्रधान देश है

मुझे समानता का अधिकार है
समानता योग्यता पर आधारित है
योग्यता अवसर प्रदान करती है
भारत एक अवसर प्रधान देश है

स्वतन्त्रता जन्मसिद्ध अधिकार है
जो मौत तक रहेगा
मेरी मौत अभिमन्यु जैसी ही होगी
फिर भी मैं अभिमन्यु नहीं हूँ

जिस व्यूह मे मैं फंसा हूँ
उसे तोड़ना मुझे नहीं आता
इतिहास मे मेरा नाम नहीं होगा
क्योंकि मैं अभिमन्यु नहीं हूँ

## अपने से लौटते हुए

फिर लौट कर
उस ही गुलमोहर के
नीचे आ जाना
यात्रा का अन्त नही है
अन्तहीन यात्रा का
एक पड़ाव है

जब मैं थक जाता हूँ
दौड़ते हुए, लोगों के पीछे
चीजों के पीछे
और उन सभी के पीछे
जो मुझे नहीं मिलते

मैं फिर लौट कर
उस ही गुल मोहर के
नीचे आ जाता हूँ
जहाँ से मैंने
यात्रा शुरू की थी
अपनी शेप यात्रा को
पूरी करने के लिए

ये सोच कर कि
पहले मेरी दिशा
सही नहीं थी
फिर थोड़ा सुस्ता कर
नई दिशा में चल देता हूँ

जिस दिन
मेरी यात्रा
समाप्त हो जाएगी
उस दिन
ये
गुलमोहर
वहां आ जाएगा
जहा मेरी यात्रा का
अन्तिम पड़ाव होगा

## तुम्हारे और मेरे बीच

तुम्हारे और मेरे बीच
एक शून्य है
एक अदृश्य
निराकार शून्य
उस शून्य में
विलीन हो जाते है
तुम्हारे विचार
हो जाते हैं
उतने ही अदृश्य
जितना कि शून्य

और
जो तुम
महसूस भी नहीं कर रहे हो
वो मैं
स्पष्ट देख पा रहा हूँ
अदृश्य में
कुछ
पीले, काले और लाल धब्बे हैं
हां वही मैं हूँ
मेरा यथार्थ है
और
मेरा रचना संसार भी

तुम्हारे और मेरे बीच
एक अन्धेरा है

एक स्पष्ट अन्धेरा
तुम्हारे
दिव्य अलौकिक चेहरे का अन्धेरा
तुम देखते हो सिर्फ अपना
आलोकित
प्रभामय स्वरचित संसार
अपनी
चुंधियायी आंखों से देख नहीं पाते
अपने से बाहर
और लौट जाते हो
प्रमुदित प्रसन्न उन्मत
अपने
राजप्रासाद की ओर

और
हर वार
तुम्हारे और मेरे बीच
का शून्य
वृहद होता जाता है
तुम्हारे और मेरे बीच
का अन्धेरा
और भी
गहराता जाता है

## मेरी आँखें

मैं अपनी आंखो को
कहीं सुरक्षित रख देना चाहता हूँ
जब अन्धेरा ही देखना है
तो आंखों की उपयोगिता भी क्या है
मेरी आंखें भिन्नता लिए हैं
धृतराष्ट्र की आंखों से
मैं जन्मांध नहीं हूँ
अब अंधा होना चाहता हूँ
इससे पहले कि
मेरी आंखें निकाल ली जाएं
कुणाल की तरह
मै अपनी आंखों को
कही सुरक्षित रख देना चाहता हूँ

मेरे शहर में
इन दिनों
कई नेत्र-शिविर लगे हुए है
वो लोग ढूंढ रहे हैं उन लोगों को
जो देख सकते हैं
जो देख सकते हैं देश को
झांक सकते हैं गहराई तक
जो पढ सकते है घटनाएं
समझ सकते हैं कविताएं
एक षड्यन्त्र जो रचा जा रहा है
जरूरी है समझना

यों भी सफल व्यक्ति वही है
जो सब कुछ देखता है
आंखें मूंद कर
और तेजी से गुजर जाता है
सब कुछ रौंदते हुए
जैसे कि बुलडोजर
गुजर जाता है झोंपड़ियों पर से
शायद यह जरूरत भी है
एक विकासशील देश की

जब हमें एक आवाज का ही
समर्थन करना है तो
इसमें आंखों की
जरूरत भी क्या है
आंखें होते हुए भी
जब हमें
अंधे की भूमिका निबाहनी है
तो सफल अभिनय के लिए
अन्धा होना ही अच्छा है

फिर भी
एक चालाकी बरतना
उचित ही रहेगा
हो सकता है
आज नहीं तो कल
देखने की जरूरत पड़ जाए
इसलिए किसी नेत्र-शिविर में
आंखें खो देने से अच्छा है
मैं अपनी आंखों को
कहीं सुरक्षित रख दूं
अन्धेरे में

## शब्दों की ताजगी के लिए

सारे सन्दर्भ जब एक ही
प्रश्न से जुड जाते है
और सारे उत्तर मिल कर भी
किसी प्रश्न का हल नहीं बन पाते
तब महसूस होता है कि
हम लोग अब तक
जिस गोल गुम्बद वाली इमारत के
चक्कर लगा रहे थे
वह वास्तव में एक उल्टा कुआं है

उसमें से आती आवाजों का सदर्भ
हम अपने प्रश्न से जोडने लगते थे
जबकि वे अन्दर फंसे हुए लोग
स्वयं घुट रहे है
उन तक हमारे प्रश्न पहुंचे ही कब है
वहां से निकलती
अस्पष्ट ध्वनियां
जिनका हम
कोई गूढ़ अर्थ खोजते हैं
वे केवल अंधे कुएं में
फसे लोगों की कातर प्रार्थनाएं हैं

उनके सोचने का विषय
इस समय है तो ये कि
कुआ उल्टा कैसे हुआ
पर नहीं

वे इस पर नही सोचते
उनके पास ग्रौर ही प्रश्न बहुत है
इससे ग्रच्छी बहस तो वे
गरीबी हटाने ग्रौर समाजवाद लाने पर कर सकते हैं

हां हम
जो लोग बाहर है
ग्रपने कान
उस गुम्बद से ग्राने वाली ग्रावाजों से हटा ले
ग्रौर ग्रपने चेहरो पर
*काली स्याही पोत*
कहीं खुले में बैठ कर
बिना ग्रपनी पहचान की फ़िक के
एक बात शुरू करें
बहस नही
बात का विषय
टोपियों का रंग न हो
हाँ यदि
रंग ही की बात करनी हो तो
हमें ग्रासमान पर पुत गए
लाल रंग की करनी चाहिए

प्रश्न एक ही हो
सदर्भ ग्रनेक हो सकते हैं
पर हम मे से कोई भी
इन्द्र-धनुष की बात न करें
ग्रौर न ही गंभीरता को नष्ट करने के लिए
परिवार-नियोजन का नया नारा दे
यदि ऐसा हुग्रा तो
हमारे चारों ग्रोर खिच ग्राएगी गोल गुम्बद
ग्रौर हमारे चेहरों के रंग

पीले हो जायेंगे
हम किसी भी संदर्भ को
किसी भी प्रश्न से जोड़ बैठेंगे

लगता है कि
बात शुरू करने से पहले
हमें आग जला कर
अग्नि-परीक्षा देनी होगी
हमारा विश्वास
एक-दूसरे पर से उठता जा रहा है
हमारा ध्यान
फिर उसी गोल गुम्बद पर जा रहा है

आओ पहले हम
अपने पर विश्वास कर लें
उस उल्टे कुएं को ढ़हा दें
और निर्माण करें
ऐसी इमारत का
जहां गूंज सकते हों
हमारे शब्द
और रोशनदानों से
आती हों ठंडी हवाएँ
ताकि हमारे शब्दों को
एक नयी ताजगी मिले
और हम
संदर्भों में भटकना छोड़ कर
किसी हल की ओर बढ़ें

## छगन लाल बीमार है

छगन लाल बीमार है
ये समाचार आकाशवाणी से प्रसारित नहीं हुआ है
न देश के किसी समाचार-पत्र में प्रकाशित हुआ है
न ही छगन लाल मेरा भाई-बन्धु या मित्र है
जाहिर है कि छगन लाल नेता, अभिनेता या
अधिकारी नही है

छगन लाल एक मोची का नाम है
मेरे घर से थोड़ा आगे
एक बरगद के नीचे
एक पैंतीस वर्षीय बूढा
जूते गांठता है
फटे जूतों को सीता है
जीवित है इसलिए जीता है
लोगों के जूते चमकाता है
खुद बुझा जाता है

छगन लाल का एक गांव भी है
जहां वह कभी-कभी जाता है
ज्यादातर यहीं बरगद के
नीचे सो जाता है
गांव मे एक बूढी मां है
पत्नी है और तीन बच्चे है
पहले जमीन भी थी
जो अब रहन पर है

अपनी ही जमीन पर
पूरा परिवार मजदूरी करता है
और यूं अपनी
पेट भराई करता है
छगन लाल जूते गाठता है
और स्वप्न देखता है
जमीन छुड़ाने के लिए
सत्तू फांकता है
छगन लाल घर वालों से भी
गप्प हांकता है

छगन लाल बीमार है
ये जान कर मुझे
जरा भी विस्मय नहीं हुआ
वह जूते गांठते-गांठते हांफता था
बलगम उगलता था खांसता था
और अपने आप पर हंसता था

मुझे कोई दु:ख नहीं है
छगन लाल के
सरकारी अस्पताल में होने का
मुझे दु:ख है
अपने जूते फट जाने का
अब दूसरा मोची
ज्यादा पैसे लेगा
छगन लाल को मैं
कम ही टिकाता था
उनको भी वो
हँस कर ही उठाता था

छगन लाल का

कोई अस्तित्व नहीं है
छगन लाल सिर्फ
एक नाम है कई चेहरों का
उसको ठगने वाले
कई चेहरे हैं
बिना नामों के
छगन लाल की जमीन
कभी वापस नहीं होगी
छगन लाल की बीमारी
कभी ठीक नहीं होगी

इस पेड़ से निकलने वाली
लोकतन्त्र/स्वतन्त्रता/समानता
की टहनिया
पूरे जंगल में फैल जाएगी
जिसके पत्तों की हवा से
शब्दों को एक
नयी जिन्दगी मिलेगी

लेकिन
उनके उत्तराधिकारी
जगल का दोहन कर
अपने
शीशे के घरो की
सुरक्षा में व्यस्त हैं
और
हवा को कैद कर खुश है

वो नही जानते कि
हवा कभी कैद नहीं हो सकती
ये हवा
प्रचंड आंधी बन कर
उनके
शीशे के घरो को
चूर कर देगी
शीशे के
करोड़ों टुकड़े
खून के कतरों में
वदल जायेंगे
खून का
हर कतरा एक शब्द होगा

बयान करेगा मौसम का
एक एक शब्द
बदला लेगा
हवा को क़ैद
करने की साजिश का

## वे लोग और वे लोग

गहराती अन्धियारी रातों के
सन्नाटे में
मैं चौक उठता हूँ
वे लोग
यहां किसी भी वक्त आ सकते हैं

चहरे पर सफेद नकाब डाले
हाथों में आधुनिक हथियार लिए
हमारे घरों के
कुंडों को कभी खड़खड़ा सकते हैं
या फिर
बन्दूकों के कुन्दों से
तोड़ सकते हैं
चरमराते दरवाजों को

वे लोग
किसी भी क्षण
लूट सकते हैं
हमारी अस्मत
छीन सकते हैं
किसी के भी सुहाग को
यहां भी हो सकता है
किसी नारायणी के साथ बलात्कार

वे लोग
यहीं आसपास

मंडराते रहते हैं
हर समय

फिर श्रायेंगे
वे लोग
खाकी वर्दियों में
जीपों में
गरजते, धूल उड़ाते

फिर उधेड़ेंगे
हमारी नुची हुयी चमड़ी को
ठोकरें मारेंगे
दहशत भरे जिस्मों को
श्रौर ···· ···· श्रौर
तोड़ जायेंगे टूटे घरों को

एक बार फिर
फाड़े जायेंगे कपड़े नारायणी के
श्रौर उसे
स्वीकार करना होगा कि
उसके साथ
नहीं हुश्रा बलात्कार

हमे बतलाया जायगा कि
हमारे साथ क्या हुश्रा था
उनके लिखे
बयानों पर
चस्पां किए जायेंगे
हमारे श्रंगूठे

## खेल कठपुतलियों का

एक बूढ़ा
सिद्धहस्त सूत्रधार
कुछ कठपुतलियों के सहारे
विशाल रंगमंच पर छाया हुआ है

अपनी अशक्त
दसों अंगुलियों से थामे हुए है
निर्जीव कठपुतलियों की
जिन्दगी के धागे
कठपुतलियां
उसकी अंगुलियों के इशारे पर
नाचती हैं/गाती हैं/मटकती हैं
हँसती हैं/रूठती हैं/झगड़ती हैं
इस तरह
दर्शकों को बहलाए रखती है

कठपुतलियां
केवल होंठ हिलाती है
आवाज नेपथ्य से आती है
कठपुतलियां
एक ही भाषा/एक ही स्वर/एक ही मुद्रा में
एक आवाज का समर्थन करती हैं

कुछ दर्शक
तालियां बजाते हैं

कुछ ऊब कर
बाहर चले जाते हैं
कुछ प्रतिक्रियावादी
नारे लगाते हैं
कुछ
तांत्रिक/बाजीगर/मदारी
दर्शक दीर्घा में ही
अपना खेल दिखाते हैं

सूत्रधार
दर्शकों का ध्यान बटता देख
मंच पर
समस्याओं का प्रदर्शन करता है
कठपुतलिया
कुछ देर के लिए
मंच से अदृश्य हो जाती है

सूत्रधार
स्वयं मंच पर आता है
कुछ घड़ियाली आसू बहाता है
दर्शक
भावना में बह जाता है
और कुछ ही
क्षणों के बाद
मंच पर फिर
कठपुतलियों का
खेल
शुरू हो जाता है

# मांस के हिस्सेदार

भेड़िए और गिद्ध
एक संयुक्त मोर्चा बनाते हैं
पर जंगल में शासन
शेर का ही रहता है

शेर चाहे कितना ही
बूढा है
पर उसकी गर्जना से
अब भी
जंगल कांप उठता है
और फिर
वह जानता है
भेड़िए और गिद्ध
उसके खिलाफ नहीं हैं

कुछ और जंगलवासी
एक होने की कोशिश में
हमेशा लड़ते रहते हैं
इनमें कुछ
महत्वाकांक्षी खरगोश भी हैं
जो नहीं जान पाते कि
शिकार
हमेशा उन ही का क्यों होता है

और जब कभी
ऐसा महसूस होने लगता है

कि अब
शेर का शासन
समाप्त होने वाला है
तो
भेड़िए या गिद्ध
दोनों में से कोई भी
शेर से
हाथ मिला लेते है
और
भागीदार हो जाते हैं
नर्म मांस के लोथड़ों में
शासन
और भी मजबूत हो जाता है
जंगल में
एक बार फिर
शान्ति छा जाती है

•

मेरी मां से
मुझे एक अव्यक्त सहानुभूति थी
लेकिन मुझसे
किसी को भी सहानुभूति नहीं थी
और तुमसे
जिसकी मुझे कोई पहचान नहीं थी
मैं सिर्फ नफरत करता था
तुम्हारे न होने के बावजूद
जब तुम मेरे लिए
कुछ भी नहीं छोड़ जा सकते थे
तो किसी निरर्थक क्षण को
मुझमें क्यों नष्ट किया

मुझे क्षमा करना मेरे पिता
मैंने तुम्हें सिर्फ गालियां दी थी
और मेरे पिता
आज परास्त हो तुम्हें क्षमा करता हूं
लेकिन मैं जानता हूं
मेरा पुत्र मुझे क्षमा नही करेगा
क्योंकि मेरी क्षमता नही है
उसे 'सुशिक्षित' करने की
मैं असमर्थ हूं
अपने पुत्र को 'आधुनिक' बनाने में
मैं असमर्थ हूं
उसे 'सुसंस्कृत' बनाने में
मैं जानता हूं
वो भी मेरी तरह
'सभ्यता' की दौड़ में हार जाएगा

मेरे पिता
मेरे साथ जो सभ्यता जवान हुयी थी

## मेरे पिता जवाब दो/मैं क्या जवाब दूँगा

मुझे क्षमा करना मेरे पिता
मैंने तुम्हें/बहुत गालियां दी हैं

मुझे जन्म देना
तुम्हारा उद्देश्य नही था
शायद एक जिस्मानी ऊब से
मेरा जन्म हुआ होगा
मैं भी इतना ही निरुद्देश्य हूँ
जितना मेरा जन्मना
जिस समय मेरा जन्म हुआ
देश को एक खुशफहमी थी
इस ही से शायद तुमने सोचा हो
मेरा भविष्य उज्ज्वल होगा
इससे पहले कि मैं
अपने पैरों पर खड़ा हो सकूं
तुम मेरे पिता
मुझसे बहुत दूर जा चुके थे

मेरी उम्र के साथ-साथ
एक हिंसक सभ्यता
जवान होती गयी
मेरे आसपास
मैं पहचानता था तो
सिर्फ एक औरत को
जो मेरी मां थी
एक अबला अनपढ़
भारतीय नारी

मेरी मां से
मुझे एक अव्यक्त सहानुभूति थी
लेकिन मुझसे
किसी को भी सहानुभूति नहीं थी
और तुमसे
जिसकी मुझे कोई पहचान नहीं थी
मैं सिर्फ नफरत करता था
तुम्हारे न होने के बावजूद
जब तुम मेरे लिए
कुछ भी नहीं छोड़ जा सकते थे
तो किसी निरर्थक क्षण को
मुझमें क्यों नष्ट किया

मुझे क्षमा करना मेरे पिता
मैंने तुम्हें सिर्फ गालियां दी थीं
और मेरे पिता
आज परास्त हो तुम्हे क्षमा करता हूँ
लेकिन मैं जानता हूँ
मेरा पुत्र मुझे क्षमा नहीं करेगा
क्योंकि मेरी क्षमता नहीं है
उसे 'सुशिक्षित' करने की
मैं असमर्थ हूँ
अपने पुत्र को 'आधुनिक' बनाने में
मैं असमर्थ हूँ
उसे 'सुसस्कृत' बनाने मे
मै जानता हूँ
वो भी मेरी तरह
'सभ्यता' की दौड़ में हार जाएगा

मेरे पिता
मेरे साथ जो सभ्यता जवान हुयी थी

आज उस ही का नशा चारों ओर है
और मैं सभ्य नहीं हूँ

नाटक यह है कि
हर व्यक्ति वजनी शब्दों में
इस नशे का विरोध करता है
साथ ही हर रोज
अपने पुत्र को
इस ही नशे का टॉनिक देता है
सभ्य लोगों का ये नाटक
मैं जानता हूँ नया नहीं है
मेरे पिता
इसकी भूमिका
तुम्हारे समय से शुरू हो चुकी थी
मैं और तुम
इस साजिश के शिकार हुए
एक साजिश जो
पुरातन है/इतिहास है
तुम शोषित थे
मैं शोषित हूँ
मेरा पुत्र भी
शोषित होगा

मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया
मेरा पुत्र मुझे क्षमा नहीं करेगा
वो जब मुझसे सवाल करेगा
मैं क्या जवाब दूंगा

वो जब पूछेगा मुझसे
मुझे क्यों पैदा किया

वो जब पूछेगा मुझसे
तुम क्यों नही सभ्य हुए
वो जब पूछेगा मुझसे
तुम क्यों नहीं भ्रष्ट हुए
वो जब पूछेगा मुझसे
तुमने क्यों नहीं धन कमाया
वो जब पूछेगा मुझसे
क्यों नहीं उसे कॉन्वेन्ट में पढ़ाया
वो जब पूछेगा मुझसे
क्यों नही उसे सुसंस्कृत बनाया

तो मेरे पिता जवाब दो
मैं उसे क्या जवाब दूंगा

## घर : एक सहमा हुआ अहसास

ढाई कमरों के
घरनुमा मकान के कोनों में
अपना दुबका हुआ बचपन
महसूसता हूँ

और उसकी
पलस्तर उखड़ी दीवारों पर
किशोरावस्था में लिखे
अपने नाम के अक्षर ढूंढ़ता हूँ

दुबका हुआ बचपन
मां की छातियों से सटकर
एक आश्वस्त
गर्माहट महसूस करता था
और घर को
एक जरूरत समझता था
जब कहीं दूर होता
घर को ललकता था

विश्वासभरी
किशोरावस्था में
घर की दीवारों पर
अपना नाम लिख कर
ढाई कमरों के मकान को
कोठी हो जाते देखता था

जिसके दरवाजे पर
सुनहरी तख्ती पर
मेरा नाम होता था

आज घर की
दीवारों को देख कर
डर जाता हूँ

पलस्तर उखड़ी दीवारें
बरसात में टपकती छत
उखड़ा हुआ फर्श
चूहों के बिल हुए कोने

सहमा-सहमा सा
अपराधी-सा
कहीं दुबक जाता हूँ

## मेरी मां का स्वप्न

हर मां का एक स्वप्न होता है
मेरी मा भी
एक मां थी
उसका भी एक स्वप्न था
मुझे लेकर

हर बेटा
अपनी मां की
आंख का तारा होता है
कैसा भी हो
भविष्य का सहारा होता है
मैं भी होनहार बिरवान था
मेरे भी चीकने पात थे

मेरी मां का स्वप्न था
मैं ओहदेदार बनूंगा
समाज में प्रतिष्ठित
और इज्जतदार बनूंगा
एक बंगले और कार का
हकदार बनूंगा
मां का ये स्वप्न
न जाने कब
मेरा स्वप्न बन गया
मैं बचपन से ही
एक अलग दुनियां में खो गया

मुझे न जाने क्यों
भाग्यशाली होने का भ्रम हो गया
और जब
मां की वर्षों की साधना से
ओहदा पाने के लायक हो गया
ओहदा ही कहीं खो गया
कुछ दिन जूते घिस कर
अपने भ्रम से निकल कर
किसी ओहदेदार का
अहलकार हो गया

मेरी मां का
विश्वास टूट गया
उसका ईश्वर रूठ गया
मैं बूढी मां की बातों से
खीजता था
अनजाने मे
आक्रोश से मुट्ठियां भीचता था

एक दिन मां ने
आंखें बन्द कर ली
मां का स्वप्न भी
बन्द आंखों में मर गया
मैं खुश था
मां के नही स्वप्न के मरने से
फिर मुझे लेकर
किसी ने स्वप्न नही देखा
और कौन देखता
मैने भी नहीं देखा

## मैं असभ्य हूँ

मैं असभ्य हूँ
क्योंकि
मैं औपचारिक गोष्ठियों में बैठ कर
साहित्य, संस्कृति और कला पर
बात नहीं करता
मेरे चेहरे से
आभिजात्य नहीं टपकता
मैं कहीं से भी
बुद्धिजीवी नहीं लगता

मैं असभ्य हूँ
क्योंकि
मैं हिन्दी स्कूल में पढ़ा हुआ हूँ
मैं औपचारिक होने का
नाटक नहीं कर सकता
शिक्षित लोगों में बैठ कर
बात-बात में
अंग्रेजी शब्दों का
उच्चारण नहीं कर सकता

मैं असभ्य हूँ
क्योंकि
मैं व्यवहार कुशल नहीं हूँ
मैं व्यक्तियों का
उपयोग करना नहीं जानता
सम्बन्धों को

भुनाना मुझे नहीं आता
मुझ में
प्रभावित करने के गुण नहीं हैं
न ही मैं
उपयोगी प्राणी बन सकता

मैं असभ्य हूँ
क्योंकि
मैं झूठ नहीं बोलता
किसी को गाली नहीं देता
किसी को हिकारत से नहीं देखता
किसी की चापलूसी नहीं करता

मैं असभ्य हूँ
क्योंकि
मैं भावुक हूँ
संवेदनशील हूँ
मैं ठहाका लगाकर हँसता हूँ
कभी-कभी
लोगों के बीच रो भी देता हूँ

मुझे सभ्य लोगों में
बैठना नहीं आता
क्योंकि
मै असभ्य हूँ

## ये झूँठ है कि ईश्वर मर गया

नीत्शे ने कहा था कि
ईश्वर मर गया

नीत्शे ने
ये कब कहा था
ये क्यों कहा था
मुझे नहीं मालूम

पर ये झूंठ है कि
ईश्वर मर गया

ईश्वर जो कहीं नही था
जो कभी नहीं था
कई नामों से आज है
ईश्वर झूंठ में है
ईश्वर धोखों में है
ईश्वर आश्वासनों में है
ईश्वर एक साधन है
मानवता को कुचल देने का

ईश्वर अनेक नामों का
एक नाम है
ईश्वर एक कल्पना है
ईश्वर सैकड़ों बार
बोला गया एक झूंठ है
जो सच लगता है

